फांसी से मुक्ति

यह घटना भारत पाकिस्तान के विभाजन के समय की है। लाहौर की जेल में एक नामधारी सिक्ख हत्या के एक झूठे जुर्म में कैद था। उस युवक का नाम संत इन्दर सिंह था। उसे फांसी की सजा मिली हुई थी, वह अपनी मौत की घड़ियां गिन रहा था।
संत इन्दर सिंह को अपने बच्चे याद आ रहे थे और वह शोकग्रस्त था।
संत इन्दर सिंह के सामने उसकी पत्नी और बच्चों के चित्र घूम रहे थे। मेरे बाद मेरी पत्नी और मेरे बच्चों का क्या होगा ?
मैं अपने सतिगुरु जी को अरदास करता हूँ शायद वे कृपा कर दें ?
संत इन्दर सिंह अपनी काल कोठरी में श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी के चरणों में अरदास करने के लिए खड़ा हो जाता है।
बरबस उसके हाथ आकाश की ओर उठ गये, आंसुओं की धारा बहने लगी। श्री सतिगुरु जी मेरे प्राणों की रक्षा करो, मुझे इस जेल से मुक्त करवाओ, ताकि मैं अपने बाल बच्चों के पास जीवित पहुंच सकूं। बस अब तुम्हारा ही सहारा है।

अरदास करने के कुछ क्षणों के बाद अचानक चमत्कार हुआ। उसने देखा कि श्री सतिगुरु प्रताप सिंह जी जेल का फाटक पार करके उसकी काल कोठरी की ओर बढ़ते चले आ रहे थे। जेल के पहरेदार श्री सतिगुरु जी को देख नहीं पाये। ये उसी तरह हो रहा था जैसे भगवान श्री कृष्ण जी के जन्म के समय सारे पहरेदार सो गये थे।

श्री सतिगुरु जी उसकी कोठरी के पास आये। लोहे की सलाखें पार कर कोठरी में पहुंच गये। इन्दर सिंह ने हाथ जोड़कर सतिगुरु को नमस्कार किया।

सतिगुरु जी को अपने सामने देखकर इन्दर सिंह गद्गद हो गया। उसका कंठ भर आया। वह सतिगुरु जी के चरणों में गिर गया।
इन्दर सिंह, मेरे बच्चे ! घबराओ नहीं, तुम्हें जल्दी ही जेल से छुट्टी मिल जायेगी। मैंने तेरी फांसी की सजा माफ करा दी है। तुम जल्दी ही अपने परिवार के पास पहुंच जाओगे।
यहां से छूटकर तुम सीधे श्री जीवन नगर आ जाना और अपने बच्चों से मिलना।

इन्दर सिंह को ढ़ाढस बंधाकर श्री सतिगुरु जी सलाखों से निकलकर बाहर फाटक की ओर चल दिये।

सतिगुरु जी जब जेल का फाटक पार कर रहे थे, तब अचानक जेल के पहरेदार की नजर उन पर पड़ गई। उसने खतरे का सायरन बजा दिया। यह कौन भाग रहा है ?
तुरन्त सारे कैदियों की गिनती की गयी, परन्तु कैदी पूरे थे। पहरेदार सबको यकीन दिला रहा था कि उसने एक कैदी को फाटक से बाहर जाते देखा था।
1
2
3
श्री जीवन नगर में श्री सतिगुरु जी अपने सेवक के साथ बात कर रहे थे क्योंकि सब लोगों को मालूम था कि इन्दर सिंह को फांसी हो गयी होगी। साध संगत इंतजार कर रही थी कि सतिगुरु जी इन्दर सिंह के भोग की तारीख देंगे। पर सतिगुरु जी तो जानी–जान थे।
वजीर सिंह क्या इन्दर सिंह की कोई खबर आई है।
सतिगुरु जी की कृपा इन्दर सिंह पर हो गई है और फांसी की सजा माफ हो गई है।
सन् 1947 में हिन्दुस्तान–पाकिस्तान के विभाजन के समय डाक, टेलीफोन और तार व्यवस्था चरमरा गयी थी। हिन्दू भारत की ओर भाग रहे थे और मुसलमान पाकिस्तान की ओर रवाना हो रहे थे। मुल्तान में फांसी देने वाले जल्लाद को इस फांसी की इत्तला नहीं पहुंची, इस करके जल्लाद नहीं आ पाया।

फांसी से मुक्ति

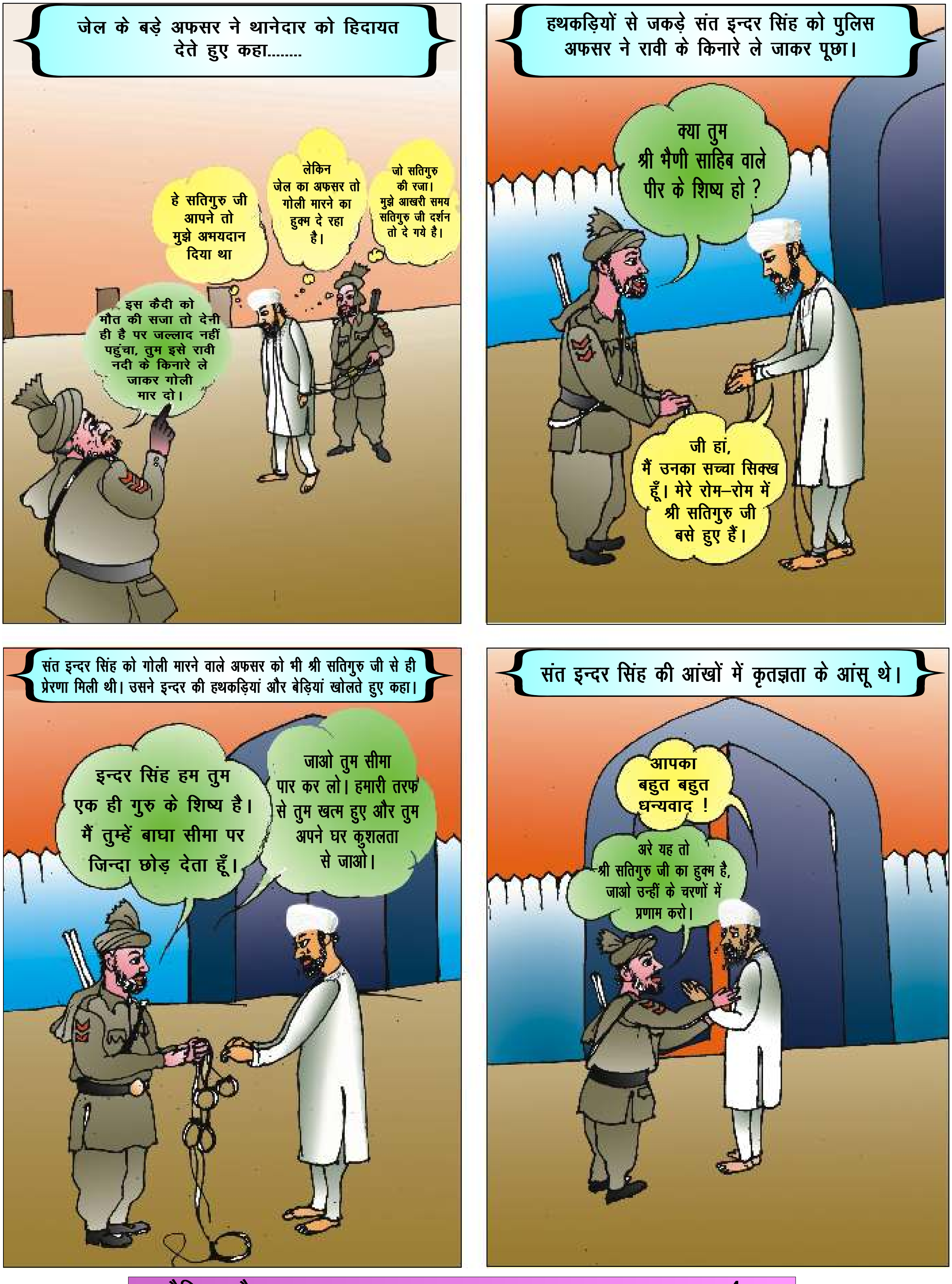
जेल के बड़े अफसर ने थानेदार को हिदायत देते हुए कहा........
इस कैदी को मौत की सजा तो देनी ही है पर जल्लाद नहीं पहुंचा, तुम इसे रावी नदी के किनारे ले जाकर गोली मार दो।
हे सतिगुरु जी आपने तो मुझे अभयदान दिया था
लेकिन जेल का अफसर तो गोली मारने का हुक्म दे रहा है।
जो सतिगुरु की रजा। मुझे आखरी समय सतिगुरु जी दर्शन तो दे गये है।
हथकड़ियों से जकड़े संत इन्दर सिंह को पुलिस अफसर ने रावी के किनारे ले जाकर पूछा।
क्या तुम श्री भैणी साहिब वाले पीर के शिष्य हो ?
जी हां, मैं उनका सच्चा सिक्ख हूँ। मेरे रोम–रोम में श्री सतिगुरु जी बसे हुए हैं।
संत इन्दर सिंह को गोली मारने वाले अफसर को भी श्री सतिगुरु जी से ही प्रेरणा मिली थी। उसने इन्दर की हथकड़ियां और बेड़ियां खोलते हुए कहा।
इन्दर सिंह हम तुम एक ही गुरु के शिष्य है। मैं तुम्हें बाघा सीमा पर जिन्दा छोड़ देता हूँ।
जाओ तुम सीमा पार कर लो। हमारी तरफ से तुम खत्म हुए और तुम अपने घर कुशलता से जाओ।
संत इन्दर सिंह की आंखों में कृतज्ञता के आंसू थे।
आपका बहुत बहुत धन्यवाद !
अरे यह तो श्री सतिगुरु जी का हुक्म है, जाओ उन्हीं के चरणों में प्रणाम करो।

कुछ दिनों के बाद संत इन्दर सिंह को भ्रम हो गया कि मुझे सतिगुरु जी ने नहीं बचाया, बल्कि मैं तो खुद ही पुलिस वाले की मेहरबानी से जेल से बाहर आया हूँ और सतिगुरु जी की निंदा करने लग गया।

इससे आगे क्या हुआ ये आप भाग 2 में पढ़ें।